ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

SANSKRITIK PRAVAH

Research Journal

वर्ष 8 अंक 2 अगस्त, 2021

Bi- annual Bi-lingual

A Multi Disciplinary Peer Reviewed (Refereed)
Research Journal
Dedicated to Socio-Cultural Harmony.

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर (राज.)

Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan

www.sanskritikpravah.com

Subscription Rate

Institution & Library	-	Rs. 2200 (5 years)	Rs. 6000 (15 years)
Individuals (Rajasthan)	-	Rs. 950 (5 years)	Rs. 2600 (15 years)
(Out of Rajasthan)	-	Rs. 1000 (5 years)	Rs. 2800 (15 years)
Single Copy	-	Rs. 125/-	

Subscription may be sent by cheques/drafts drawn in favour of
Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan

The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and the **'Sanskritik Pravah' Research Journal** accepts no responsibility for them.

Correspondence and Contact

सांस्कृतिक प्रवाह

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

E-mail : editor.sprj@gmail.com
: ramsjaipur@gmail.com
website : www.sanskritikpravah.com
Contact : 0141-4038590 (4 PM Onwards), 094143-12288 (Chief Editor)
094600-70031(Editor)

Published by : Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)
B-19, Madhukar Bhawan, New Colony, Jaipur-302001

Printed at : Kumar & Company, Jaipur

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

वर्ष 8 अंक 2 अगस्त, 2021

अर्द्धवार्षिक द्वि-भाषी

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए
समर्पित एक बहु-विषयात्मक शोध पत्रिका

website : www.sanskritikpravah.com

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

Sanskritik Pravah Research Journal

Patron

Sh. Ramprasad
Social Worker & Guardian, Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur (Raj.)

Editorial Advisory Board

Dr. Kuldeep Chand Agnihotri
Ex Vice Chancellor, Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala (H.P.)

Dr. Bhagwati Prasad Sharma
Vice Chancellor, Gautam Buddha University, Greater Noida (U.P.)

Prof. J. P. Sharma
Ex Vice Chancellor,
MLS University, Udaipur (Raj.)

Prof. Bhagirath Singh
Vice Chancellor,
Pandit Deen Dayal Upadhyay University, Sikar (Raj.)

Prof. M. L. Chhipa
Ex Vice Chancellor,
A.B. Vajpayee
Hindi University, Bhopal (M.P.)

Prof. Vibha Upadhyay
Ex. Head, Department of History and Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur

Prof. Alpana Kateja
Professor of Economics,
University of Rajasthan, Jaipur (Raj.)

Dr. Shreerang Godbole
Endocrinologist, Social Worker & Writer,
Pune (Maharastra)

Managing Editor

Dr. Ram Karan Sharma
Ex- Principal & Head,
Deptt. of Law and Management,
NIMS University, Jaipur (Raj.)
H-28, Haldighati Marg,
Jaipur-302018

Chief Editor

Sh. Ram Swaroop Agrawal
Ex Principal, Govt. Law College,
Kota & Sriganganagar (Raj.)
72/25, Patel Marg, Mansarovar, Jaipur-302020
E-mail : ramsjaipur@gmail.com
Mobile : 09414312288

Editor

Dr. Gopal Sharan Gupta
Centre for Rajasthan Studies,
University of Rajasthan, Jaipur
Plot No. 28, Gyanvihar Colony, Model Town,
Jagatpura Road, Malviya Magar, Jaipur-302017
E-mail : gsgupta1960gmail.com,
Mobile : 09460070031

Associate Editor

Dr. Indrajeet Bhattacharya
Member, Museum Association of India,
Member, ICOMOS INDIA
Res. : 143, Indira Colony, Bani Park, Jaipur
E-mail : indrajeet201070@gmail.com
Mobile : 9571806910

Editorial Board

Dr. Ashutosh Pant
Chairman, Fluorecent Group of, Institutions,
Sec -26, Near N.R.I Circle, Pratap Nagar, Jaipur - 302033
17, Nandpuri, Malviya Nagar, Jaipur-302017
E-mail : pant_ashutosh@rediffmail.com,
Mobile : 09636770535

Dr. Sunil Asopa
Professor, Deptt. of Law,
J.N.V. University, Jodhpur
61-B, Laxmi Nagar, Jodhpur-324006,
E-mail : sunasopa@gmail.com,
Mobile : 09414294406

Dr. Satish Chand Agrawal
Assistant Professor, Deptt. of Poltical Science,
M.L.S. University, Udaipur (Raj).
Plot No. 9, Agrasen Nagar, Udaipole, Udaipur-313001
E-mail : satish.political@gmail.com ,
Mobile : 09783055596

Dr Kailash Chand Gurjar
Assistant Professor, Deptt. of History,
M.L.S. University, Udaipur(Raj)
W- 6 , Nehru Hostel, Hiran Magari,
Sector -3, Udaipur-313001
E-mail : kailashchand191977@gmail.com
Mobile:9929089995

About Contributors of this issue

1. **प्रो. विनय कपूर मेहरा**

   कुलपति, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, सोनीपत (हरियाणा)

2. **प्रो. विभा उपाध्याय**

   सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान), 'राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद की अवधारणा : समीक्षा' सहित तीन पुस्तकें तथा विभिन्न विषयों पर 36 शोध पत्र प्रकाशित; 10 पुस्तकों का संपादन, विभागीय शोध पत्रिका 'Jijnasa' की संपादक, 'इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टॉरिकल रिसर्च' (ICHR) सहित भारत सरकार के कई निकायों में सदस्य, इतिहास संकलन योजना से संबद्ध।

3. **डॉ. धर्मचन्द चौबे**

   'इतिहास के सिद्धान्त एवं इतिहासकार', 'भारतीय संस्कृति की धाराएँ' एवं 'भारतीय इतिहास दृष्टि' सहित 5 पुस्तकें तथा भारतीय संस्कृति का विश्व संचार एवं भारत-चीन ऐतिहासिक संबंधों पर अनेक शोध पत्र प्रकाशित।

   सम्प्रतिः एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), राजकीय महाविद्यालय, उच्चैन, भरतपुर (राजस्थान)

4. **दीपाली पटवाडकर**

   स्तंभकार, लेखक एवं चित्रण कलाकार। सोफ्टवेयर उद्योग में 20 वर्षों तक कार्य करने के पश्चात् भारत विद्या (Indology) में एम.ए. किया। 2016 में 'Kalapushpa Books'n Arts' की स्थापना की। अब तक 4 पुस्तकें प्रकाशित। इनके चित्रों की पुणे में एकल प्रदर्शनी लगी। अनेक हिन्दी-मराठी पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित।

5. **डॉ. देवा राम मेघवाल**

   अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में 25 शोध पत्र तथा दो पुस्तकें प्रकाशित, 'राजस्थान में प्रजामण्डल आंदोलन' तथा 'विभाजन के संबंध में डॉ. अम्बेडकर के विचार' शीर्षक से दो शोध प्रकल्प (यूजीसी) पूर्ण, लंदन में हुईअंतरराष्ट्रीय कांफ्रेन्स के एक सत्र की अध्यक्षता की।

   सम्प्रतिः राजकीय बांगड़ पी.जी. महाविद्यालय, पाली में एसोसिएट प्रोफेसर।

6. **डॉ. आशीष सिसोदिया**

   'दक्षिणी राजस्थान का हिन्दी साहित्य' एवं 'सरल भाषा विज्ञान' सहित चार पुस्तकों का लेखन, 40 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित, 'नव सृजन' साहित्य पत्रिका के संपादक तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पत्रिकाएँ - 'अपरा' एवं 'सरयू' का संपादन।

   सम्प्रतिः मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के हिन्दी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर

7. **डॉ. विजय वशिष्ठ**

राजस्थान कॉलेज शिक्षा के अंतर्गत स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त, कोटा विश्वविद्यालय प्रबन्ध मण्डल एवं केन्द्र सरकार की 'कपार्ट' (Capart - लोक कार्यक्रम और ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास परिषद) के सदस्य रहे हैं। इन्हें राजस्थान सरकार द्वारा समाजसेवा के लिए वरिष्ठ नागरिक सम्मान से भी नवाजा गया।

8. **डॉ. पुना राम पटेल**

इतिहास एवं राजनीति विज्ञान के साथ ही भौतिक शास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री, 'महाराणा प्रताप एवं राष्ट्रकवि दुरसा आढ़ा' एवं राष्ट्र कवि दुरसा आढ़ा का 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पुस्तकों के लेखक, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की पाठ्यक्रम समिति के सदस्य तथा इतिहास संकलन समिति, मरूप्रांत के प्रांत संगठन मंत्री।

सम्प्रति : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भीमाना (सिरोही) में वरिष्ठ अध्यापक।

9. **डॉ. रजनी मीणा**

'राजपूताने के सैनिकों का विदेशी अभियान' विषय पर शोध कार्य, 'भारतीय संस्कृति की धाराएँ' तथा 'Economic and Social Life in Ancient India' पुस्तकों का लेखन एवं अनेक शोध पत्रों का प्रकाशन।

सम्प्रतिः राजकीय पी.जी. महाविद्यालय, राजगढ़ के इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विषय में असिस्टेन्ट प्रोफसर।

10. **रजनी यादव**

'रियासत काल में अलवर का नगरीय विकास' विषय पर शोध कार्य में संलग्न।

सम्प्रति : माध्यमिक विद्यालय, मानोता खुर्द (भरतपुर) में प्रधानाध्यापिका।

11. **डॉ. गोपाल शरण गुप्ता**

सचिव, अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान

अनुक्रमणिका/ CONTENTS

		पृष्ठ संख्या
	संपादकीय ...	8
1.	**भारतीय नारी के चैतन्य की पुनः प्रकाशना में भक्ति आंदोलन का योगदान** – डॉ.धर्मचन्द चौबे	10
2.	**इस्लाम का विस्तार एवं हिन्दू प्रतिरोध (आरंभ से 12वीं सदी तक)** – डॉ. पुनाराम	18
3.	**राजस्थान का मध्यकालीन संत साहित्य** – डॉ. आशीष सिसोदिया	28
4.	**राजगढ-नीलकंठ क्षेत्र का लोकधर्म और देवोपासना** – डॉ. रजनी मीणा	38
5.	**नाथपंथ का उदय, प्रभाव और अलवर के प्रमुख नाथ संत** – श्रीमती रजनी यादव	50
6.	**महान प्रतापी सम्राट महेन्द्रपाल प्रथम – एक मूल्यांकन** – डॉ. देवाराम	64
7.	**Democratic Political Tradition in Ancient India : A Retrospection** – Prof. Vibha Upadhayay	71
8.	**An Analysis of the Leadership Styles of Rama and Ravana Based on Valmiki Ramayana** **– Deepali Patwadkar**	79
9.	**विचार – भारत में अल्पसंख्यकवाद** – (प्रो.) डॉ. विजय वशिष्ठ	89
10.	**परिचर्चा – समान आचार संहिता : एक देश, एक कानून** – प्रोफेसर विनय कपूर मेहरा	96
11.	**पुस्तक समीक्षा** – डॉ. गोपाल शरण गुप्ता	103
12.	**गतिविधि**	105
•	Guidelines for authors	106
•	Review & Publication Policy, Ethics Policy	109
•	शोध पत्र हेतु मुख्य विषय	110
•	संस्थान के प्रमुख प्रकाशन	113

संपादकीय

देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कई तरीकों से हो रहा था। क्रांतिकारी सशस्त्र संघर्ष कर रहे थे। महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा अहिंसक संघर्ष किया जा रहा था। सविनय अवज्ञा, असहयोग और भारत छोड़ो आंदोलन हुए। देश के बाहर रहकर विश्वयुद्ध जैसी वैश्विक परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए अनेक देशभक्तों द्वारा अंग्रेजों पर दबाव बनाया जा रहा था। कनाड़ा में गदर पार्टी का गठन कर हजारों युवा आजादी की लड़ाई लड़ने भारत पहुँच गए थे। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने तो बाकायदा आजाद भारत की अस्थाई सरकार का गठन कर एक बड़ी सेना तैयार कर ली थी और अंग्रेजों के विरुद्ध भारत की पूर्वी सीमा पर युद्ध छेड़ते हुए मणीपुर व नागालैंड के कुछ इलाकों को अंग्रेजों से स्वतंत्र करा लिया था। गांधीजी के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान देशभर में लोगों ने 'अहिंसा' को धत्ता बताकर पुलिस-थानों और सरकारी भवनों पर कब्जा कर लिया तथा संचार व्यवस्था भंग करने के लिए तार काट दिए। सेना का आवागमन रोकने के लिए रेल-पटरियाँ उखाड़ी गईं। अनेक स्थानों पर 'जनता का राज्य' स्थापित हो रहा था।

आजाद हिंद फौज के फौजियों पर लाल किले में अंग्रेजों द्वारा 'देशद्रोह' का मुकदमा चलाने पर देश में आक्रोश की लहर पैदा हो गयी थी। भारत की नौसेना ने विद्रोह कर दिया। सशस्त्र बलों के अनेक सिपाहियों/सैनिकों के बागी होने के समाचार आ रहे थे। युद्ध के कारण इंग्लैण्ड की सैन्य शक्ति और अर्थव्यवस्था क्षीण हो रही थी।

इन सब परिस्थितियों को देखकर अंग्रेज समझ गए थे कि अब अधिक समय तक वे इस देश पर राज नहीं कर पाएँगे। उन्होंने भारत छोड़ना ही मुनासिब समझा। वे यहाँ से चले गए, परन्तु देश को विभाजित करके तथा लगभग 562 देशी रियासतों को स्वतंत्र करते हुए गृह युद्ध जैसी परिस्थिति का निर्माण करके गए।

आजादी की बेला तक क्रांति के माध्यम से संघर्ष करने वाले अनेक वीर शहीद हो चुके थे, फिर भी कुछ जेलों में या जेलों के बाहर जीवित थे। विदेश में रहकर भारत की आजादी के लिए सर्वस्व होम कर देने वालों में भी कइयों को आजाद भारत में सांस लेने का अवसर मिल रहा था। गांधीजी के नेतृत्व में चले संघर्ष में शामिल लगभग सभी नेता जीवित थे ही। अच्छा होता यदि सभी प्रकार से संघर्ष करने वाले देशभक्तों के हाथों में संयुक्त रूप से स्वतंत्र भारत की बागडोर सौंपी जाती। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। स्वतंत्र भारत की सत्ता गांधी मार्ग से संघर्ष करने वालों के हाथ में आ गई। अंग्रेजों को भी ऐसे नेतृत्व से वार्ता करना और उन्हें सत्ता सौंपना अपने अनुकूल लगा।

वस्तुत: 15 अगस्त, 1947 को देश की आजादी के समय मात्र सत्तांतरण ही हुआ, वह भी अधूरा था। भारत के राष्ट्राध्यक्ष (गवर्नर जनरल) तथा सेनाध्यक्ष पद पर क्रमश: 10 व 17 माह तक अंग्रेजों को बैठाए रखा गया। जिन लोगों ने देश के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी, फाँसी पर चढ़ गए या

कालापानी की असहनीय और क्रूरतम सजा भुगती, जिनको अपनी समस्त संपत्ति से बेदखल होना पड़ा, ऐसे क्रांति के पुजारी, भारत मा के सच्चे सपूतों को न केवल सत्ता से दूर रखा गया वरन् नए शासकों ने उनकी व उनके परिवार की सुध तक नहीं ली। दुखद पक्ष तो यह है कि पाठ्यपुस्तकों तक में उन लोगों के बलिदान और त्याग के बारे में बहुत कम लिखा गया।

देश के लिए बलिदान होने वालों की अनेदखी करना भारी पड़ गया। देश की युवा पीढ़ी आजादी के महत्त्व से अनजान है। उसे लग रहा है कि कुछ हजार लोगों ने आजादी के लिए धरने दिए, जुलूस निकाले, जरूर लाठियाँ भी खाईं और जेल भी गए, परन्तु इसके बदले उन्हें देश की सत्ता मिल गई। जिन लोगों ने गोली खाई, प्राण त्याग दिए, फाँसी पर चढ़ गए, कालापानी में अपार कष्ट सहे, आज उनकी गाथाएँ नई पीढ़ी को बताई जाती तो इस पीढ़ी में भी देश के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा उत्पन्न होता।

स्थान-स्थान पर आजादी की लड़ाई लड़ने वालों का लक्ष्य मात्र सत्ता हस्तांतरण नहीं था, उनका लक्ष्य था- 'स्वराज'। स्वराज जहाँ 'स्व' यानि अपनेपन का अहसास हो - अपनी संस्कृति, अपने जीवन मूल्य, अपना आध्यात्म, भारत की पहचान, भारत की विरासत, स्वधर्म, स्वदेशी, स्व-तंत्र, अपने लोग, अपना गाँव, अपना साहित्य, अपनी भाषा, अपने रीति-रिवाज, अपनी माटी की सौंधी महक। परन्तु यह सब नहीं हुआ, बल्कि इनके प्रति एक 'छोटेपन' का भाव निर्माण हुआ। आजादी के पहले अंग्रेज इस देश में जैसे लोग बनाना चाहते थे, वैसे लोग आजादी के बाद बनते गए। लोगों का जैसा आचार-व्यवहार बनाना चाह रहे थे - वैसा बन रहा है। अपनी भाषा का त्याग और अंग्रेजी के प्रति मोह पागलपन की सीमा तक बढ़ गया।

हमें वामपंथियों, तथाकथित श्यूडो सेक्युलर व तुष्टीकरण में लगे राजनैतिक दलों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए बनाए गए 'विमर्शों' को तोड़ना होगा। इसके लिए सबको अपने-अपने स्तर पर प्रयास करने होंगे। 'दे दी हमें आजादी, बिना खड्ग बिना ढाल' वाली मानसिकता को बदलना होगा। आजादी के लिए शहीद हो गए वीरों की कहानियों से नौजवानों को परिचित कराना होगा। 'स्वराज' का सही अर्थ बताना होगा। 'स्वराज' के लिए प्रयास करने होंगे।

देश में इन दिनों आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। यह सही समय है जब 'आजादी के लिए किए गए संघर्ष का पुनरावलोकन' किया जाए। आजादी के संघर्ष की अनेक अनकही परन्तु प्रेरणादायक संघर्ष गाथाएँ हैं, अनेक बलिदान कथाएँ हैं, आजादी के अनेक गुमनाम योद्धा हैं, उन सबके बारे में शोध परक आलेख आगामी दो अंकों में दिए जाने का सुझाव आया है। आप सबसे ऐसे आलेख भेजने का अनुरोध करता हूँ।

- रामस्वरूप अग्रवाल